

trachten, erwägen: परि विद्यानि चेत्सा मृशसे पर्वसे मती RV. 9, 20, 3. ये वा दंसास्यच्छिन्ना विप्रासः परिमामृषुः 8, 9, 3. तत्स्वर्षं परिमृष्यताम् MBh. 12, 6645. वाक्यं तत्परिमृष्य R. 1, 2, 20. 3, 75, 59. डुःपरिमृष्टं Suçr. 1, 30, 20. Jmd untersuchen so v. a. befragen: यावदन्त्योऽन्यं विप्राः परिमृशन्ति ते KATHAS. 24, 224. — 3) finden, wahrnehmen: स तन्विकेतं परिमृष्य प्रून्यम् Buāg. P. 8, 19, 11. — Vgl. परिमर्ष. — intens. umfassen, umspannen: विद्या ज्ञातान्येषां परि धामानि मर्मशत् RV. 8, 41, 7. परि दिव्यानि मर्मशद्विद्यानि सोमं पार्थिवा वसूनि 9, 14, 8.

— प्र anfassen, betasten: नेदं नान्ना रत्नं प्रमृशन् (vgl. u. अनु) ÇAT. Br. 1, 2, 2, 13. 3, 3, 4, 6. AV. 8, 6, 6. प्रमृष्टं berührt v. l. für आमृष्ट ÇAk. 161. — Vgl. प्रमृश.

— अभिप्र raffen, fassen: आ नो भर दन्तिषोनाभि सव्येन प्र मृश RV. 8, 70, 6. मा नो मृचा रिपूणां वज्रिनानामविष्यवः । देवा अभि प्र मृशत 56, 9. दृच्छा चिदर्थः प्र मृशन्त्या भर 21, 16. — intens.: पत्तो मृकीम्वनिं प्राभि मर्मशद्विद्यन्स्तनयजेति नान्दत् RV. 1, 140, 5.

— प्रति antasten: पस्ते गर्भं प्रतिमृशात् AV. 8, 6, 18. — Vgl. प्रतिमर्ष.

— वि 1) befühlen, streicheln: चारुमुखं विमृष्य (so die ed. Bomb.; विमृष्य DRAUP. 6, 17) MBh. 3, 15682. पांसुगुणितसर्वाङ्गी विमर्ष च पाणिना R. 2, 20, 32. — 2) mit dem geistigen Organ befühlen so v. a. untersuchen, betrachten, erwägen, überlegen (mit und ohne obj.): मनसा विमृष्टम् RV. 10, 88, 10. ऋतस्य योनिं विमृशत् घासते 63, 7. वि राक्षितो अमृशद्विद्यन्त्रम् (vgl. aber die v. l. TBa. 2, 3, 2) AV. 13, 1, 8. विमृशन् MBh. 1, 4625. 2, 644. 664. नारद्वचः 3, 16753. 4, 1270. R. 2, 28, 25. Spr. 923. 1484. 2994. 4821. KATHAS. 12, 83. 33, 20. 34, 242. 43, 210. Buāg. P. 1, 17, 20. 7, 9, 39. BHATT. 3, 7. विमृषत् स्वयं बुद्ध्या R. 4, 6, 11. एको ऽर्थं विमृषत्येको धर्मस्य कुरुते मतिम् 5, 77, 10. विमर्ष MBh. 5, 7011. KATHAS. 39, 29. मनसा 40, 29. अतः 43, 207. 43, 101. विमर्षार्थ्या Buāg. P. 6, 3, 10. सर्वा विमृशते जन्तुः कृच्छ्रस्यो धर्मदर्शनम् MBh. 9, 1875. धर्म विमृशमानानाम् Spr. 2020. विमृशो MBh. 2, 547. 3, 15477. 5, 3514. 12, 6373. 18, 68. विमृषे Mārk. P. 127, 15. साधु तावद्विमृष्यताम् MBh. 12, 4146. R. 3, 73, 59. विमृष्य BHAG. 18, 63. MBh. 3, 15477 (विमृष्य ed. Calc.). 16649. 13, 284. KUMĀRAS. 6, 87. KATHAS. 33, 99. PĀNĀT. 129, 13. HIT. 31, 21. 39, 9. 43, 6. 59, 19. 63, 20. 73, 24. 89, 1. PRAB. 62, 1. 109, 6. BHATT. 12, 24. विमृष्य Suçr. 1, 100, 17. Mārk. P. 22, 27. 69, 41. RĪGĀ-TAR. 4, 459. विमृष्यकारिन् Spr. 3226. अविमृष्य ohne weiter nachzudenken MBh. 13, 7426. PĀNĀT. 238, 25. अविमृष्यकारिन् Mārk. 133, 7. इति विमृष्टं भवति KĀND. Up. 1, 1, 1. विमृशिताध्यात्मपदवि Buāg. P. 4, 7, 42. mit einem inf. sich bedenken Etwas zu thun, Anstand nehmen Spr. 1373. इमं मां च शास्त्रे प्रयोगे च विमृशतु prüfen, examinieren MĀLAV. 11, 23. एवं विमृष्य विविधैः कार्णैर्लक्ष्यैश्च ताम् MBh. 3, 2680. विमृशति (so die neuere Ausg.) स्म तं (कृष्णं) देवा (देवं die neuere Ausg.) दिव्याभिरुपपत्तिभिः HARIV. 2836. वलं तावद्विमृष्यताम् (so die neuere Ausg.) 5439 = 4980 (विमृष्यताम् die ältere, विमृग्यताम् die neuere Ausg.). Eine wirkliche Verwechslung mit मर्ष liegt in folgenden Stellen vor: अर्पबुद्धिस्त्वं यः स्वर्गमुखमनुत्तमम् । संप्राप्तं वक्तुमत्तव्यं विमृष्यस्यबुधो यथा (विमृशसि ed. Bomb., अनुमनुभवेति विचारयसि Schol.) MBh. 3, 15441. इति यावद्विमृष्यति

*) Die ed. Bomb. hier und in der Folge überall richtig ş.

(am Ende eines Çloka) KATHAS. 43, 187. — Vgl. विमर्ष figg. — caus. betrachten, überlegen, erwägen Spr. 2018. PĀNĀT. 21, 8. अथो विरुपेमममुं च लोकं विमर्शितो (sc. लोकौ) हेतुतया पुरस्तात् die er schon vorher in Bezug auf das Verlassen betrachtet hatte so v. a. die zu verlassen er schon vorher gedacht hatte Buāg. P. 1, 19, 5.

— अनुवि nachdenken, überlegen, erwägen: ऽनृष्य DAÇAK. in BENF. Chr. 181, 15.

— प्रवि dass.: ऽमृष्य (so die ed. Bomb. und DRAUP. 6, 7) MBh. 3, 15673. वाक्यं तत्प्रविमृष्य च R. GORR. 1, 2, 19.

— संवि dass.: ऽमृष्य KATHAS. 32, 12.

— सम् act. med. anfassen, berühren TBa. 2, 1, 3, 6. 3, 10. ÇAT. Br. 1, 3, 4, 21. क्वीषि 2, 6, 4, 17. KĀTJ. Ça. 6, 9, 1. 2, 6, 27. 3, 2, 14. रूमीन् ऽच. GRU. 2, 6, 4. प्राणान् (vgl. u. अभि) TS. 2, 6, 9, 7. ÇĀNKH. Ça. 2, 17, 1. GORR. 2, 8, 13. अध्वर्युर्जमानश्च संमृशते fassen sich an ÇAT. Br. 3, 3, 4, 16. 17. KĀTJ. Ça. 8, 3, 14.

मर्ष (von मर्ष) m. Bez. eines Niesemittels ÇĀRNG. SĀN. 3, 3, 18. 19. — Vgl. प्रतिमर्ष.

मर्शन (wie oben) n. 1) das Berühren: परदार (मर्षण ed. Calc.) MBh. 3, 17447. — 2) das Prüfen, Untersuchen Buāg. P. 3, 32, 34. = मीमांसा Schol.

मर्ष. मृष्यति, ऽते DĀTUP. 26, 55 (तितितायाम्): मर्षति, ऽते 17, 57 (सेचने und सक्ने); dieses nicht zu belegen, dagegen मृषत् Buāg. P. 3, 18, 6; मर्ष und häufiger मृषे; मृषत् ved.: मृषिवा und मर्षिवा P. 1, 2, 25. Vop. 26, 205. Vgl. मर्ष, welches häufig unrichtiger Weise mit प geschrieben wird. 1) vergessen, vernachlässigen, sich aus dem Sinne schlagen: न मृष्यते प्रथमं नार्परं वचः RV. 1, 143, 2. न ते भोजस्य मृष्यं मृषत् 7, 18, 21. न मृष्यते युवतयो ऽवाता वि यत्पयो विद्यानिन्वा भरते 6, 67, 7. — 2) geduldig ertragen: अमृष्यमाणं ÇAT. Br. 12, 3, 1, 11. MBh. 4, 459. R. 1, 1, 81. 2, 109, 30. सिंहादस्त्वं श्रुत्वा नामप्यत्पाकशानिः MBh. 1, 5477. तास्तथा सन्नवीर्यैः संपन्नान्यैरसंमतान् । नामप्यन् (so die ed. Bomb.) कुरवो दृष्ट्वा पाण्डवान् 2237. लोको न मृष्यति UTTARARĀMAK. 33, 10. अविनित्तस्य तु वलं न मृष्ये वञ्चं चास्मि प्रक्षरिष्यामि धारम् 14, 356. Buāg. P. 9, 13, 21. सो ऽहं मीमस्य वचस्तद्वि न मृष्यामीह MBh. 3, 15225. पितुर्वधममृष्यन् 14, 837. 1803. HARIV. 3286. R. 3, 10, 19. Buāg. P. 4, 2, 8. 8, 26. 10, 10. तौदे मृषन् Buāg. P. 3, 18, 6. नामप्यत वचो ऽस्य तत् MBh. 1, 5135. 2, 1372. 3, 2266. 4, 464. 7, 273. Spr. 4913. ममृषे R. 5, 23, 29. RAGH. 9, 62. Buāg. P. 4, 19, 2. मुहूर्तं मृष्यताम् (pass. impers.) gedulde dich einen Augenblick R. 4, 10, 10. 16, 43. तत्राख्यं पितृतः प्राप्तान्धृतराष्ट्रो न मृष्यते er leidet es nicht, er kann es nicht ruhig ansehen, dass sie die Herrschaft vom Vater erlangten, MBh. 1, 3742. त्रियज्ञशतयज्वानं वासवस्त्वं न मृष्यति HARIV. 11249. मृष्यति ये चोपयतिम् geduldig ertragen, sich gefallen lassen M. 4, 217. ममर्ष राक्षसान्यस्त्रिणाः R. 1, 1, 74. राजपुत्रानिमान्बालान्धृतराष्ट्रो न मृष्यते er mag sie nicht MBh. 1, 5757. 13, 2228. HARIV. 4939. 6449. R. 3, 1, 19. न मृष्यति मां जीवितुं वसतस्तन्धुः er duldet es nicht, dass ich lebe, DAÇAK. in BENF. Chr. 100, 10. अमर्षत् MBh. 7, 5381 fehlerhaft für अमर्षात्, wie die ed. Bomb. liest. — caus. मर्षयति, ऽते DĀTUP. 34, 42 (तितितायाम्): partic. मर्षित P. 1, 2, 20. Vop. 26, 104. dulden, ertragen: डुःखं सुमर्षयाम्यहम् MBh. 2, 1371. दीपं चा-